International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org Volume 2 Issue 8 ǁ August. 2013ǁ PP.58-60

देवनागरी लिपि और भारतीय भाषायें

डॉ0 सूरजमुखी
अध्यक्ष–हिन्दी विभाग
बी0बी0आर0आई0 बिचपुरी, आगरा

वस्तुतः किसी भी देश की भाषा और लिपि उस देश की पहचान होती है, अस्मिता की प्रतीक। यह राष्ट्रीय और भावनात्मक एकता के लिए भी आवश्यक है। भाषा हमारे विचारों का आदान–प्रदान का माध्यम होती है। उसे लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कुछ भाषा संकेतों का सहारा लिया जाता है। जो लिपि चिह्न कहलाते हैं। लिपि भाषा का मूर्त्तरूप होती है। अर्थात् भाषा को अंकित करने की व्यवस्थित विधि होती है। लिपि एक प्रकार से दृश्य भाषा ही है। भाषा उच्चरित और मौखिक दोनों तरह की हो सकती है। जबकि लिपि अंकित एवं दृश्य होती है। जैसे कभी सिर हिलाने से तो कमी आँखों के इशारे से, मुँह बिचकाना, गहरी सांस लेना, खाँसना इत्यादि संकेतों से मूक रूप से काम चल जाता है, लेकिन लिपि भाषा के बिना अपूर्ण है। यानि लिपि और भाषा एक दूसरे की पूरक हैं।

भाषा उसे कहते हैं जो बोली और सुनी जाती है और बोलना भी पशु–पक्षियों का नहीं, गूँगे मनुष्यों का भी नहीं, केवल बोल सकने वाले मनुष्यों की भाषा का भाषा वैज्ञानिकों ने अनेक परिभाषायें हैं – ''भाषा'' शब्द संस्कृत की ''भाष्'' धातु से बना है जिसका अर्थ है – बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।

प्लेटों ने ''सोफिस्ट में विचार और भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अन्तर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।''

स्वीट का भी यही कहना है–''ध्वन्यात्मक द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।'' भाषा वक्ता के विचार को श्रोता तक पहुँचाती है। अर्थात् भाषा, विचार विनियम का साधन होती है। भारत एक मात्र अकेला देश है। जहाँ भाषा, लिपि, संस्कार और संस्कृति की सबसे अधिक विविधताएं हैं। इसके बाद भी वैदिक संस्कृत और भाषा के रूप में हिन्दी विश्वपटल पर न सिर्फ भारत की पहचान है। बल्कि एकता का इससे बड़ा प्रमाण और कुछ नहीं हो सकता। इतिहास साक्षी है कि भारत की हरभाषा में इतना उत्कृष्ट साहित्य सृजित होता आ रहा है। संसार के तमाम साहित्य प्रेमी अपनी भाषा में या तो उसे अनुवाद करे पढ़ते हैं या फिर हिन्दी सीख, भाषा और साहित्य दोनों का रसपान करते हैं। भारतीय भाषाओं में प्रमुख हैं–संस्कृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलगू, हिन्दी और रोमन में भी लिखी जाती हैं। कश्मीरी, डोंगरी, देवनागरी लिपि में लिखी जा रही हैं। तब प्रश्न उठता है कि क्या अभी जो देवनागरी लिपि है वह सभी भाषाओं को व्यक्त करने में समर्थ है? देवनागरी लिपि को हर भाषा के लिए समर्थ बनाना होगा। स्वर संकेत देने होंगे जिस प्रकार से रोमन लिपि को विविध भाषाओं को लिखने के लिए समर्थ बनाया गया है, जिसके लिए इण्टरनेशनल फोनेटिक एसोसियेशन ने लगातार कार्य किया है। उसी प्रकार से देवनागरी के लिए भी वैज्ञानिक फोनेटिक स्क्रिप्ट बनाना होगा।

इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। भारतीय मानव–विज्ञान–सर्वेक्षण के अनुसार यहाँ 1655 भाषायें और कई सौ बोलियाँ बोलने वाले लोग रहते हैं। भाषाओं के समान ही अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। एक अनुमान के अनुसार यहाँ 26 लिपियों का प्रयोग होता है। भारत में लिपियों का इतिहास ईसा पूर्व चौथी शताब्दी पुराना है। हमारे देश की दो लिपियाँ प्राचीन लिपियों के रूप में जानी जाती हैं। जिनके नाम है – ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि। पूर्व शिलालेखों, सिक्कों पर यही दो लिपियाँ अंकित हैं। इनमें से देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ मिलता है जिसका क्रम निम्नवत् है – ब्राह्मी लिपि > गुप्त लिपि > देवनागरी लिपि। इसकी उत्पत्ति के विषय में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं–

1. विद्वानों के एक पक्ष का कहना है–गुजरात के नागर ब्राह्मण इसका प्रयोग करते थे इसलिए इसे नागरी और फिर देवनागरी कहा गया।
2. कुछ लोगों का यह भी मानना है कि यह नागवंशीय राजाओं की लिपि थी इस कारण इसे देवनागरी कहा गया।
3. विद्वानों का एक वर्ग यह भी मानता है कि 'नगर' में प्रयुक्त होने कारण इसका नाम नागरी पड़ गया।
4. कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति बौद्ध ग्रन्थ 'ललित बिस्तर' की नाग लिपि से मानते है। इन सब मतों से ज्यादा तर्क संगत यह मत है–स्थापत्य की एक शैली नागर शैली कहलाती थी जिसमें चतुर्भुजी आकृतियाँ थीं। नागरी लिपि में भी चतुर्भुज अक्षर ग, प, भ, म आदि है।

इस क्षमता के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ गया। देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शाखा से हुआ जिसे नागरी कहा जाता था जो बाद में देवभाषा संस्कृत से जुड़ गयी, फिर नागरी का नाम देवनागरी हो गया। देवनागरी का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के नरेश जयभट्ट (700–800 ई0) के एक शिलालेख मिलता है। 8वीं शताब्दी से राष्ट्रकूट नरेशों में भी यही लिपि प्रचलित थी, और 9वीं शती में बड़ौता के ध्रुवराज ने भी अपने राज्यादेशों में इसी लिपि का प्रयोग किया है। यही लिपि भारत के अधिकांश क्षेत्रों में प्रचलित रही–उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार,

महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि प्रान्तों में उपलब्ध शिलालेखों, ताम्रपत्रों, हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों में देवनागरी का ही सबसे अधिक प्रयोग हुआ है।

वर्तमान में देवनागरी लिपि की जो वर्णमाला प्रचलन में है वह 11वीं शती में स्थिर हो गयी थी और 15वीं शती तक उसमें सौन्दर्यपरक स्वरूप का भी समावेश हो गया था। ईसा की 8वीं शती में जो देवनागरी लिपि प्रचलित थी, उसमें वर्णों की शिरोरेखायें दो भागों में विभक्त थीं जो 11वीं शती में मिलकर एक हो गयी थीं। 12वीं शती से 18वीं शती तक रंचमात्र का अन्तर दिखायी पड़ता है। 8वीं शताब्दी और वर्तमान शताब्दी देवनागरी में कोई विशेष अन्तर नहीं है। 19वीं शताब्दी में मशीनों द्वारा छपाई के साधन उपलब्ध हो जाने के कारण देवनागरी वर्णों में स्थितरता आ गयी। बीसवीं शताब्दी से ही देवनागरी की सम्पूर्ण भारत की एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण लिपि के रूप में मान्यता मिली हुई है।

देवनागरी लिपि के गुण :

देवनागरी लिपि भारत की एक प्रमुख लिपि है जो संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली भाषाओं को लिखने में प्रयुक्त होती है। वैसे तो विश्व की कोई भी लिपि पूर्णतः उपयुक्त नहीं कही जा सकती क्योंकि प्रत्येक लिपि में कुछ विशेषतायें होती हैं, वहीं कुछ दोष भी रहते हैं। ऐसी परिस्थिति में उसी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है, जिसमें गुण अधिक हों और दोष बहुत कम। अतः यहाँ देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार से हैं–

1. वर्ण विभाजन में वैज्ञानिकता –

देवनागरी लिपि में स्वर एवं व्यंजनों का वर्गीकरण वैज्ञानिक पद्धति पर किया गया है। इस लिपि में 14 मूल स्वर, 35 व्यंजन एवं 3 संयुक्ताक्षर है। इस विभाजन के कारण एक ओर वे वर्णों के शुद्ध रूप में उच्चरित किया जाता है। याद भी आसानी से रखा जा सकता है।

2. प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिह्न –

देवनागरी की मुख्य विशेषता में आती है। प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिह्न है। देवनागरी में प्रत्येक शब्द की केवल एक ही वर्तनी हो सकती है। जैसे–देवनागरी की 'क' ध्वनि लिपि कई प्रकार से लिखी जा सकती है जैसे –
कैट–Cat – क के लिए C,
किंग – King, क के लिए K,
क्वीन – Queen क के Q,
कैमिस्ट्री – Chemistry के लिए Ch

3. अपरिवर्तनीय उच्चारण –

देवनागरी लिपि के वर्ण चाहे जहाँ प्रयुक्त हों, उनका उच्चारण अपरिवर्तित रहता है। जबकि रोमन लिपि में एक वर्ण एक शब्द में जिस रूप में उच्चारित होता है, दूसरे शब्द से उच्चारित नहीं होता और उच्चारण परिवर्तित हो जाता है। जैसे – But – वट में U का उच्चारण 'अ' है,
Put – पुट में U का उच्चारण 'उ' है।
इसी प्रकार से City में C का उच्चारण 'स' है,
Camel – कैमल में C का उच्चारण 'क' है।

4. उच्चारण और लेखन में एक समानता –

देवनागरी लिपि में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। इसे भी देवनागरी लिपि की बड़ी विशेषता मानी गयी है। जबकि रोमन लिपि में विशेषता नहीं है। वहाँ उच्चारण और लेखन में अन्तर है। जैसे Knowledge – नॉलेज में – Knw का उच्चारण ही नहीं होता।

5. लयात्मकता या नियमबद्धता –

देवनागरी लिपि में जो नियमबद्धता या लयबद्धता वह संसार किसी भी लिपि में नहीं। वैज्ञानिक विवेचन किया जाय तो उसका क्रम इस प्रकार होगा – कंठ, तालू, मूर्धा, दन्त ओष्ठ एवं नासिका/देवनागरी लिपि की अक्षरमाला के अक्षर भी इसी क्रम में वर्गीकृत हैं।
कंठ से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – अ, आ, क, ख, ग, घ, ह।
वायु से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – इ, ई, च, छ, ज, झ, न, य।
मूर्धा से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ल।
दन्त से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – त, थ, द, ध, न, ल, स।
ओष्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
नासिका से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – ङ, ञ, ण, न, म।
कंठ तालु से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – ए, ऐ।
कंठोष्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – ओ, औ।
दन्तोष्ठ से उच्चरित होने वाली ध्वनियाँ – व।

ऐसा किसी भी भाषा में एवं भाषा की लिपि वर्णमाला का इस प्रकार का वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं मिलता है।

6. स्पष्टता –

देवनागरी लिपि की यह स्पष्टता भी बहुत श्रेष्ठ विशेषता है। पारस्परिक भ्रम की संभावना नहीं होती। रोमन लिपि की तरह नहीं है–

e, c,
o, q,
j, i,
m, n

हिन्दी में सब वर्ण अलग है। अतः देवनागरी लिपि वैज्ञानिक लिपि है।

देवनागरी लिपि के कुछ दोष –

देवनागरी लिपि में जहाँ अनेक विशिष्टतायें हैं, तो कुछ कमियां भी हैं जो निम्नवत् है –

1. इस लिपि में वर्णों की संस्था अधिक होने के कारण – सीखने, टंकण, मुद्रण में कठिनाई।
2. देवनागरी लिपि में कुछ चिह्नों में एक रूपता नहीं है – 'र' का प्रयोग चार रूपों में होता है – धर्म, क्रम, पृथ्वी, ट्रेन।
3. शिरोरेखा के कारण इस लिपि को शीघ्र लिखने में असुविधा।
4. इसमें 'इ' की मात्रा वैज्ञानिक दृष्टि से तर्कसंगत नहीं है। पहले लिखी जाती है बाद में पढ़ी जाती है।
5. इस लिपि में – क्ष, त्र, ज्ञ वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं लगती।
6. साम्यमूलक वर्णों के कारण इ से पढ़ने, समझने में कभी–कभी रेशानी हो जाती है। इस प्रकार के साम्यमूलक वर्ण है –

   व, ब,
   भ, म,
   घ, ध।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट हो गया है कि देवनागरी लिपि में वैज्ञानिकता अधिक है, दोषों में संशोधन करके इसे पूर्ण वैज्ञानिक बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं की लिपियों की चर्चा करें तो बंगला लिपि 11वीं सदी का प्रारम्भ नागरी से ही विकसित हुई है। गुजराती लिपि तो देवनागरी से ही है। इसके अधिकांश मूलाक्षर देवनागरी जैसे ही हैं। अतः नागरी लिपि ही भारत की सर्वप्रथम एवं श्रेष्ठतम लिपि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. भाषा विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग – 61वाँ अधिवेशन एवं परिसंवाद मार्च 2009
3. हिन्दी अनुशीलन – मार्च–जून 2009
4. राष्ट्रभाषा सन्देश, राष्ट्रभाषा
5. भूमण्डलीकरण, निजीकरण व हिन्दी – डॉ0 माण्कि मृगेश